B.Ed Ist year

25/04/2020
Saturday

Sub - Growing up as a Learner

Topic - Dimensions or Determinants of Personality

व्यक्तित्व की विमाएँ अथवा निर्धारक

व्यक्तित्व के विकास में मुख्यत: **दो प्रकार** के तत्वों का प्रभाव पड़ता है। —

(1) वंशपरम्परागत का
↓
कुछ लोग वंश परम्परा का Role अधिक मानते हैं।

(2) पर्यावरण / जगत / वातावरण का
↓
कुछ पर्यावरण का

निष्कर्ष — "व्यक्तित्व के विकास में पर्यावरण और वंश परम्परा दोनों का ही प्रभाव पड़ता है। व्यक्तित्व की नींव वंशपरम्परा द्वारा पड़ती है। किन्तु यह नींव व्यक्ति के सामाजिक सम्पर्कों द्वारा / वातावरण से प्रभावित होती है।"

व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले जैविक / वातावरणजन्य कारक

जैविक कारण

(1) शरीर रचना — लम्बाई, वजन, स्वास्थ्य, रंग + प्रभावशाली व्यक्तित्व

(2) अन्त: स्रावी ग्रन्थियाँ → एक प्रकार का स्राव निकालना, जिसे हार्मोन कहते हैं।

(1) थायरॉइड ग्रन्थियाँ — Thyroid Glands
(2) एड्रिनल ग्रन्थि — Adrenal Gland
(3) पिट्यूटरी ग्रन्थि — Pitutary Gland
(4) पैंक्रियाज — Pancreas
(5) गोनाड्स — Gonads

Scanned with CamScanner

थायरॉयड ग्रन्थियाँ श्वास नली के इधर-उधर होती हैं। ये ग्रन्थियाँ मनुष्य की सामान्य शक्ति / उसके चातुर्य को प्रभावित करती हैं।

③ स्नायुमण्डल — "जैविक निर्धारकों में स्नायुमण्डल का प्रमुख स्थान।"

④ शरीर रसायन - "मानव स्वभाव का कारण उसके शरीर के रसायन"

⑤ बुद्धि एवं मेधा - "बुद्धि जन्मजात और पिछलों से भी प्राप्त होती है।"

पर्यावरण जन्य कारक

1. परिवार का प्रभाव → सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाला कारक
2. जन्मक्रम → व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाला दूसरा कारक
3. सांस्कृतिक प्रभाव → सामाजिक प्रभाव में संस्कृति का प्रभाव सबसे अधिक,
4. विद्यालय का प्रभाव → परिवार के बाद सबसे महत्वपूर्ण कारक,

व्यक्तित्व में उन्नति → 04 अंग

1. शारीरिक (Physical) → वंशानुक्रम / वातावरण का गहरा प्रभाव
2. मानसिक (Mental) → बुद्धि जन्मजात / अनुकूल वातावरण का होना
3. संवेगात्मक (Emotional) → व्यक्तित्व के विकास के लिए संवेगों का शोधन आवश्यक
4. सामाजिक (Social) → सामाजिक विकास + व्यक्तित्व का घनिष्ठ सम्बन्ध

B.R.C. Deoband

Arvind Pro — Sapna Tyagi

Scanned with CamScanner